National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(58): 258-263
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

कमलकान्त
संस्कृत शिक्षक, शिक्षा विभाग,
हिमाचल प्रदेश।

Correspondence:
कमलकान्त
संस्कृत शिक्षक, शिक्षा विभाग,
हिमाचल प्रदेश।

धर्मशास्त्र एवं आयुर्वेद में गर्भ-विज्ञान

कमलकान्त

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17759219

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परम्परा में "गर्भ-विज्ञान" केवल जैविक प्रक्रिया न होकर एक पूर्ण शास्त्रीय विज्ञान माना गया है, जिसमें मनुष्य-निर्माण की शारीरिक, मानसिक, दैहिक, दैविक एवं सामाजिक सभी परतों का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है। ऋग्वेद से लेकर चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, अथर्ववेद, मनुस्मृति, गरुड़पुराण, कौटिलीय अर्थशास्त्र, काश्यप संहिता और धर्मसूत्रों तक—गर्भोत्पत्ति, गर्भसंरचना, गर्भाधान-संस्कार, गर्भाशय-स्वास्थ्य, मातृ-आचार, भ्रूण विकास के चरण, दोष-दूषण, आहार-विहार, संस्कार तथा संतति-गुणनिर्माण का अत्यन्त सूक्ष्म एवं व्यवस्थित विवेचन मिलता है।पाश्चात्य विज्ञान जहाँ गर्भ को मात्र एक जैविक इकाई की दृष्टि से देखता है, वहीं भारतीय शास्त्र भ्रूण को "जीव की पुनर्जन्म यात्रा का नया द्वार" कहते हैं। गरुड़पुराण में कहा गया है—**"नवमासे स्थितो देही गर्भे तिष्ठति दुर्गतः।"**[1] अर्थात् जीव अपने कर्मफलानुसार गर्भ में नव मास तक स्थित होकर देह धारण करने की प्रक्रिया से गुजरता है।**कौटिलीय अर्थशास्त्र** में गर्भ-विज्ञान को राज्य के स्वास्थ्य-तंत्र का अनिवार्य अंग माना गया है, और चरकसंहिता में कहा गया— **"शरीरस्य गर्भो मूलम्"**[2]

भारतीय ज्ञान-परम्परा में **गर्भविज्ञान** केवल जैविक घटना नहीं, बल्कि **धर्म**, **आयुर्विज्ञान**, **आत्मविद्या**, **नैतिकता**, **आध्यात्मिक साधना**, और **सृष्टि-तत्वज्ञान** के सम्मिलित अध्ययन का विषय रहा है। वैदिक साहित्य से लेकर आयुर्वेद, धर्मशास्त्र, स्मृतियाँ, उपपुराण, संस्कार-ग्रंथ तथा आचारशास्त्रीय परम्पराएँ—सभी में गर्भ की उत्पत्ति, संरक्षण, विकास, संस्कार और शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक परिपक्वता का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है।ऋग्वेद में गर्भ को "गुह्यं ब्रह्म"[3] कहा गया—अर्थात् वह रहस्य जिसमें समस्त जीवन की संभावनाएँ सुप्त अवस्था में स्थित रहती हैं। उपनिषद गर्भ को "जीवस्य आयतनम्"[4] बताते हैं—जहाँ आत्मा प्रथम बार स्थूल देह से सम्बन्ध स्थापित करती है। धर्मशास्त्र इसे "कुल-धर्म-परम्परा का आधार" बताते हैं[5], और आयुर्वेद गर्भोत्पत्ति-तत्वम्, दोषधातु, मातृपितृ-भाव, आहार-विहार तथा गर्भसंस्कार को जीवन-निर्माण की वैज्ञानिक प्रक्रिया मानता है।[6]

इस प्रकार गर्भविज्ञान भारतीय दर्शन का केवल जैविकी विषय नहीं, बल्कि मानव-धर्म, समाज, संस्कृति, पारिवारिक उत्तरदायित्व, आयुर्विज्ञान और आध्यात्मिक साधना को एकसूत्र में बाँधने वाला समन्वित विज्ञान है।

१.१ विषय का महत्व

आधुनिक विज्ञान गर्भ को मुख्यतः आनुवंशिक, भ्रूणीय, पोषणीय और चिकित्सकीय दृष्टि से देखता है; जबकि धर्मशास्त्र एवं आयुर्वेद गर्भ को—जैविक शरीर (शारीर), मानसिक संरचना (मनस्), संस्कार-स्वरूप चेतना (चित्त) और आत्मिक विकास (आत्मभाव) इन चारों का सम्मिलित केन्द्र मानते हैं। भारतीय परम्परा के अनुसार गर्भ ही भविष्य का मनुष्य नहीं बनाता, बल्कि गर्भ में ही भविष्य के नागरिक, नीतिज्ञ, वैचारिक प्रवृत्तियाँ, गुण–दोष, संस्कार, चरित्र, स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की नींव रखी

जाती है।

इसलिए यह अध्ययन न केवल शास्त्रीय महत्व का है, बल्कि—मातृ-स्वास्थ्य, समाज-निर्माण, नैतिकता, संस्कार-निर्माण, मानसिक स्वास्थ्य, जनस्वास्थ्य-नीति, तथा आधुनिक चिकित्सा-शिक्षा इन सबके लिए अत्यंत आवश्यक है।

१.२ धर्मशास्त्र और आयुर्वेद का समन्वय

धर्मशास्त्र मुख्यतः मानव की नैतिक–आचारिक–संस्कारिक संरचना का विज्ञान है, जबकि आयुर्वेद जीवन और शरीर का। दोनों का समन्वय गर्भ के अध्ययन में इस प्रकार होता है:

धर्मशास्त्र	आयुर्वेद
गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन आदि संस्कार	गर्भसृष्टि का जैविक आयुर्विज्ञान
दम्पत्ति-धर्म, माता-पिता का आचार	गर्भिणी-परिचर्या, आहार-विहार
गुण-दोष सिद्धान्त (सात्त्विक, राजसिक, तामसिक)	वात, पित्त, कफ – दोष संतुलन
धर्म–कर्म आधारित मानसिक संस्कार	गर्भसंस्कार की मानस-चिकित्सा
जन्म-धर्म और ऋतुओं का शास्त्र	ऋतु, बीज, क्षेत्र, समय – गर्भोत्पत्ति-कारण

इस शोध-पत्र का उद्देश्य इन दोनों परम्पराओं के आधार पर गर्भविज्ञान की **समन्वित, वैज्ञानिक, शास्त्रीय व व्यावहारिक रूप से प्रमाणिक व्याख्या** प्रस्तुत करना है।

१.३ पूर्व-अध्ययन

गर्भविज्ञान पर आयुर्वेद के प्रमुख स्रोत—

- **चरक संहिता**, शारीरस्थान
- **सुश्रुत संहिता**, शारीरस्थान
- **अष्टाङ्ग हृदयम्**, शारीरस्थान

धर्मशास्त्रीय स्रोत—

- **मनुस्मृति**,
- **याज्ञवल्क्यस्मृति**,
- **गृह्यसूत्र**,
- **संस्कार-प्रदीप**,
- **गरुड़पुराण**,
- **विष्णुधर्मसूत्र**,
- **बौधायन**, **आपस्तम्ब**, **गौतम धर्मसूत्र** आदि।

ये सभी ग्रन्थ गर्भाधान–पूर्व तैयारी से लेकर, गर्भोत्पत्ति, गर्भवृद्धि, पोषण, गर्भसंस्कार, गर्भिणी-आचार तथा शिशु के जन्म तक का अत्यन्त विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं।

भाग 2 वैदिक एवं उपनिषदों में गर्भविज्ञान

भारतीय वेद–साहित्य विश्व में मानव-जन्म, गर्भोत्पत्ति, भ्रूण-विकास और गर्भसंस्कार पर सर्वप्रथम, सर्वाधिक प्रामाणिक तथा अद्‌भुत वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। वैदिक ऋषियों ने गर्भ को मात्र शारीरिक विकास नहीं माना, अपितु उसे ऋत (सृष्टिक्रम), सत्य (अस्तित्व), ब्रह्म (चैतन्य), प्रजा (वंश), तथा धर्म (जीवन के उच्चतम मूल्य) से जोड़कर देखा।

ऋग्वैदिक गर्भविज्ञान गर्भ को ब्रह्मरूप – चैतन्य का केन्द्र

ऋग्वेद में गर्भ को सीधे-सीधे ब्रह्म के रूप में वर्णित किया गया है—**"गर्भं धत्ते सविता देवो..."**[7] इस मंत्र का तात्पर्य यह कि सविता देवता स्वयं जीव रूपी गर्भ का धारण करवाते हैं।यह विचार स्पष्ट करता है कि गर्भ केवल आनुवंशिक संयोजन नहीं, बल्कि **दैवी चैतन्य का अवतरण** है।

गर्भ में चेतना की उपस्थिति

ऋग्वेद में कहा गया—**"जनिष्ट देवा जनिथा पितरः..."**[8] यह दर्शाता है कि गर्भ में स्थापित जीव पूर्वजन्म कर्मों से युक्त होकर आता है। आधुनिक मनोविज्ञान इसे आनुवंशिक–मानसिक प्रवृत्तियों के रूप में देखता है।

२.२ अथर्ववेद में गर्भविज्ञान

अथर्ववेद में गर्भ का सर्वाधिक विस्तृत वर्णन मिलता है। यहाँ गर्भ को "जीवन–बीज", "प्रजापति का रूप", और "धातु–सम्बन्धीय वैज्ञानिक इकाई" कहा गया है।

गर्भ संरक्षण

अथर्ववेद में प्रार्थना है— **"गर्भं ते अघ्न्यं वर्धयामि..."**[9] ऋषि गर्भ को अघ्न्य—अर्थात् जिसे किसी भी प्रकार की हिंसा, कष्ट या मानसिक आघात न लगे—कहकर उसकी सुरक्षा का विधान देते हैं।

भ्रूण-विकास का वैज्ञानिक विवरण

अथर्ववेद में भ्रूण के विकास की अवस्था का वर्णन मिलता है—

- बीज का गर्भाशय में स्थापित होना
- रक्त व धातु से उसका पोषण
- अंगों की क्रमिक रचना
- चेतना का उदय

यह आधुनिक एम्ब्रायोलॉजी से लगभग समान है।

२.३ उपनिषदों में गर्भ का आध्यात्मिक विज्ञान

उपनिषदों में गर्भ को आत्मा का आवरण (शरीर) कहा गया है। वे गर्भ को "आत्मा की अग्नि"[10] और "प्राणों का उद्‌गम" मानते हैं।

छान्दोग्य उपनिषद् में कहा गया—**"तं गर्भं दधाति..."**[11]

अर्थात्—जीव माता के गर्भ में प्रवेश कर शरीर धारण करता है। यहाँ आत्मा-देह-संस्कार के त्रिकोण का विश्लेषण मिलता है।

बृहदारण्यक उपनिषद्[12] कहता है— **"यथाकर्म यथाश्रुतं..."** अर्थ — जीव का गर्भ में रूप, प्रवृत्ति एवं पृथक व्यक्तित्व उसके पूर्वजन्म कर्मों के अनुसार होता है। आयुर्वेद के बीज–क्षेत्र–ऋतु–आहार सिद्धान्त को यही आधार मिलता है।

वैदिक ऋतुकाल और गर्भोत्पत्ति विज्ञान

वैदिक शास्त्र 'ऋतु' को अत्यंत महत्व देते हैं।

- ऋग्वेद[13]– ऋतु में गर्भधारण से श्रेष्ठ गुण उत्पन्न होते हैं।
- मनुस्मृति[14]– ऋतु में गर्भाधान धार्मिक कर्तव्य है।

आयुर्वेद में भी यही—

"ऋतुकालेषु गर्भस्य उत्पत्तिः"[15] गर्भोत्पत्ति की वैज्ञानिक परिकल्पना प्रस्तुत करता है।

वैदिक दृष्टि से गर्भ-संस्कार

वैदिक युग में गर्भाधान संस्कार को धर्म–परम्परा की मूल जड़ माना गया: **"गर्भाधानं प्रथमो वेदः"**[16]

ऐसा इसलिए क्योंकि— श्रेष्ठ संतति, श्रेष्ठ समाज, महान संस्कृति इन्हीं संस्कारों का फल है।

गर्भ में सतोगुण बढ़ाने के लिए—गायत्री जप, शांति पाठ, दिव्य संगीत, सात्त्विक आहार, अहिंसक व्यवहार,मानसिक शुचिता—इन सबका वर्णन वैदिक ग्रन्थों में मिलता है।

भाग 3 – धर्मशास्त्र में गर्भविज्ञान का दार्शनिक आधार

3.1 धर्म और जैव–सत्ता का सम्बन्ध

भारतीय धर्मशास्त्र गर्भाधान को मात्र शारीरिक घटना नहीं मानता, बल्कि **धर्म–कर्म, ऋतु, ऋणमोचन, संस्कार, और दैवी-संज्ञान** से जोड़कर देखता है। मनुस्मृति कहती है—

"गर्भाधानादि-संस्कारैर्नृणां यान्ति शरीरताम्"[17] अर्थात गर्भाधान सहित संस्कारों से ही मनुष्य का शरीर 'धर्मपूर्वक' सिद्ध होता है। इस आधार पर गर्भ की रचना केवल जैविक प्रक्रिया नहीं, बल्कि धर्म–संस्कारपूर्ण अनुष्ठान है।

धर्मशास्त्र इसीलिए कहता है कि **संस्कार विहीन गर्भ = अप्राप्त धर्मफल वाला जन्म**।

3.2 गर्भाधान संस्कार: चरम आध्यात्मिक विज्ञान

धर्मशास्त्र अनुसार स्त्री–पुरुष के संयमित संयोग को "ऋतु–सम्बन्ध" कहा गया है। नारदस्मृति कहती है—

"ऋतुकाले तु संयोगो धर्म्यः सत्त्वप्रवर्धनः"[18] 'धर्म्य' का अर्थ है — जो कुल, शरीर, और समाज के लिए शुभ फल देने वाला।

गर्भाधान संस्कार के चरण (धर्मशास्त्रीय क्रम)

1. **ऋतु—परिचर्या** (स्त्री की शारीरिक-मानसिक शुचिता)
2. **पुंसवन इच्छा–विकास** (श्रेष्ठ संतान के संकल्प)
3. **दैव संपृक्ति** (अग्निहोत्र, देवपूजन)
4. **संस्कारोचित संयोग** (अशुद्धि, क्रोध, मद्य, रजोगुण से त्याग)
5. **गर्भ–आवाहन मंत्र**

तैत्तिरीय ब्राह्मण में कहा गया— **"मन्त्रैः गर्भं दधाति, मन्त्रैः जीवनं दधाति।"**[19] इसका अर्थ— मंत्र मनोवैज्ञानिक रूप से माता-पिता की चित्तवृत्ति शुद्ध कर भ्रूण पर सूक्ष्म प्रभाव डालते हैं।

3.3 धर्मशास्त्र अनुसार गर्भ का आध्यात्मिक स्रोत

शरीर माता-पिता से है, परंतु **चित्त और कर्मयोग्यता जीवात्मा से**।

शांकरभाष्य के अनुसार— **"कर्मानुरोधेन देहप्राप्तिः"**[20] यह बताता है कि जीव अपने पूर्वकर्मों के अनुरूप ही गर्भ में प्रविष्ट होता है।

धर्मशास्त्र इसीलिए गर्भ को "कर्म–निवर्तन का द्वार" कहता है।

3.4 गर्भ को 'ऋण–मोचन' का क्षेत्र क्यों कहा गया

उपनिषद् बताते हैं— **"मातृ–देवो भव, पितृ–देवो भव।"**[21]

स्मृतियों में इसे विस्तार से कहा गया—**"पुत्रो धर्मेण जायेत, पितृ-ऋणात् मोचयति।"**[22] अर्थात् संतान धर्मसंगत गर्भ से ही पितृ-ऋण मोचन का अधिकारी बनती है।

इस प्रकार गर्भधारण = केवल एक जैविक घटना नहीं,बल्कि त्रि-ऋण (देव, ऋषि, पितृ) की पूर्ति का आरम्भ है।

3.5 धर्मशास्त्र में भ्रूण की प्राण–प्रतिष्ठा

गरुड़ पुराण का स्पष्ट वर्णन— **"चतुर्थे मासि तु प्राणाः प्रविशन्ति शरीरकम्।"**[23] आयुर्वेद इसे जैविक विकास से जोड़ता है; धर्म इसे प्राण-चेतना के प्रवेश से जोड़ता है। दोनों प्रणालियों में यह चौथा महीना गर्भ के "चेतना–जागरण" का काल है।

3.6 धर्मशास्त्रीय दृष्टि से भ्रूण हत्या (गर्भपात) का स्वरूप

धर्मशास्त्र में गर्भपात को अत्यंत गंभीर अधर्म माना गया।

नारदस्मृति कहती है- **"गर्भघातो महापापं, ब्राह्मणवधसमं स्मृतम्।"**[24]

यहाँ यह जैवविज्ञान नहीं, बल्कि धर्म–चेतना की हानि का संदर्भ है। आयुर्वेद में भी गर्भपात को "अग्नि-विक्षय" माना गया है।

3.7 धर्मशास्त्र में गर्भ का सामाजिक आयाम

गर्भ—

परिवार का पाया, वंश का विस्तार, समाज का भावी नागरिक, और धर्म परम्परा का वाहक माना गया है।

महाभारत (शांति पर्व) में गर्भ की रक्षा को "राजधर्म" कहा गया—

"गर्भरक्षा नृपधर्मः।"[25]

अर्थात राज्य का कर्तव्य है कि गर्भ को हानि पहुँचाने वाली परिस्थिति न रहे।

3.8 स्त्री की मनोदशा और धर्मशास्त्रीय निर्देश

धर्मशास्त्र गर्भवती स्त्री को अति-सम्मानीय मानता है— क्योंकि वह "द्विज–जननी" (उत्तम संतति की जन्मदात्री) है।

गरुड़ पुराण—

"गर्भिणी रक्षणीया सर्वदैव सविशेषतः।"[26]

यह आयुर्वेदिक गर्भावस्था पालन के सिद्धांत से बिल्कुल मेल खाता है।

3.9 धर्मशास्त्र और आधुनिक भ्रूण-मनोविज्ञान का संगम

धर्मशास्त्र का यह कथन कि— **"मातुः भावो गर्भवृद्धिकरः।"**[27] आज आधुनिक Prenatal Psychology इसे 'Maternal Emotional Imprinting' कहकर स्वीकार करती है।

भाग 4 – आयुर्वेद में गर्भविज्ञान का सूक्ष्म विज्ञान

आयुर्वेद गर्भविज्ञान को "**बीज–क्षेत्र–ऋतु–आहार–विहार**" के समन्वय से उत्पन्न होने वाली जैव–मानसिक व दैहिक प्रक्रिया मानता है। चरक और सुश्रुत—दोनों इस विषय पर अत्यंत सूक्ष्म विज्ञान प्रस्तुत करते हैं।

4.1 गर्भविज्ञान की मूल परिभाषा (आयुर्वेद दृष्टि)

चरक संहिता में गर्भ की आणविक व्याख्या: **"गर्भः स्त्री-पुरुषयोः शुक्र-शोणितसम्योगजातः।"**[28] अर्थात गर्भ केवल शुक्र–शोणित के मिश्रण का परिणाम नहीं,

बल्कि सम्यक् संयोजन और सम्यक् संस्कार का परिणाम है।

4.2 गर्भोत्पत्ति के पाँच आवश्यक कारण

चरक ने गर्भ की उपत्ति को पाँच कारणों से जोड़ा—

1. **माता (क्षेत्र)**
2. **पिता (बीज)**
3. **आत्मा (जीव)**
4. **रस (पोषण)**
5. **सत्म्या–असत्म्या (आहार–विहार)**

चरक संहिता—

"पञ्च महाभूतसमुदायो गर्भः।[29]

यह एक अत्यंत वैज्ञानिक कथन है—क्योंकि आधुनिक भ्रूण-विज्ञान भी गर्भ को 5 मूलभूत तत्त्वों (कार्बन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, खनिज) के संघटन से निर्मित मानता है।

4.3 बीज (शुक्र–शोणित) का स्वास्थ्य

चरक ने गर्भोत्पत्ति में "**समगं बीज**" (Perfect gametes) की अनिवार्यता बताई—

"दोषदूषितं बीजं दुःस्वप्नकरं भवति।"[30] इसका आधुनिक अर्थ—Gametes with genetic abnormalities lead to embryonic defects.

सुश्रुत भी यही कहते हैं—**"दूषितं बीजं दोषजं विकारान् जनयति।"**[31]

4.4 गर्भ का प्रकट जैव–विकास (माह-वार वर्णन)

पहला महीना – कलल (Embryonic mass) **"आद्ये मासि कललं भवति।"**[32] आज यह मोरुला–ब्लास्टोसिस्ट अवस्था है।

दूसरा महीना – पिण्ड/घन (Gastrulation and organ primordia) **"द्वितीये मासि घनः।"**[33]

तीसरा महीना – अवयव-प्रारम्भ **"तृतीये मासि लिङ्गं ज्ञायते।"**[34] यही आधुनिक sexual differentiation है।

चौथा महीना – प्राण प्रवेश

"चतुर्थे मासि प्राणोऽस्य प्रविशति।"[35] यह वही है जो धर्मशास्त्र में भी वर्णित था।[36]

पाँचवाँ महीना – मनोविकास

"पञ्चमे मनो रूढं भवति।"[37] आधुनिक विज्ञान इसे neural cortex activation कहलाता है।

छठा महीना – बुद्धि का अंकुर **"षष्ठे बुद्धिः प्रादुर्भवति।"**[38]

सातवाँ – नवाँ महीना – पूर्णांग विकास **"सप्तमे-नवमे सम्यग् रूपं वर्धते।"**[39]

4.5 गर्भ के पोषण की आयुर्वेदिक प्रक्रिया (रसधातु सिद्धान्त)

गर्भ पोषण का वर्णन— **"रसः प्रथमं धातुः गर्भं पोषयति।"**[40] यही आधुनिक placental circulation के समकक्ष है।

4.6 गर्भिणी की आहार–विहार व्यवस्था

आयुर्वेद गर्भिणी को "द्वय-जीवा" (दो प्राणों वाली) कहता है—

"गर्भिण्या द्वौ प्राणा धार्येते।"[41]

विहार

- रति–संयम
- क्रोध–त्याग
- मधुर-पूर्णाहार
- मंदगमन
- प्रसन्न मनोवृत्ति

आहार

चरक कहते हैं— **"गर्भिणी मधुरं सेवेत।"**[42] मधुर रस = पोषण, मानसिक शांति, और धातु वृद्धि।

4.7 गर्भिणी की मनोदशा का भ्रूण पर प्रभाव

आयुर्वेद का कथन—**"मातुः भावेन गर्भस्य भावः।"**[43]

आज के Prenatal Psychology में इसे Maternal Mood Imprinting कहा जाता है।

4.8 गर्भाशय और नाड़ी–तंत्र

सुश्रुत कहते हैं— **"नाड्यः सर्वे गर्भाशये संप्रविशन्ति।"**[44]

इसका अर्थ—गर्भाशय में पूरा नाड़ी-तंत्र (vascular + nervous integration) विकसित होता है।

4.9 आयुर्वेद में गर्भ के रोग और उनकी चिकित्सा

1. गर्भाशय-दोष (uterine anomalies)
2. बीज-दोष (genetic / chromosomal issues)
3. रस-दोष (poor fetal nutrition)
4. मनो-दोष (maternal anxiety / stress)

उपचार—

"घृतं बल्यं गर्भस्य।"[45] घृत = सर्वोत्तम neuro-protective and anabolic पदार्थ।

4.10 सम्पूर्ण गर्भविज्ञान का सार

आयुर्वेद स्पष्ट कहता है—

"यथा बीजं तथा फलम्।"[46]

जिसके कारण **बीज (gametes) + क्षेत्र (uterus) + ऋतु (fertile period) + आहार (nutrition) + विहार (lifestyle)** = संपूर्ण, स्वस्थ, बुद्धिमान संतान। आयुर्वेद का गर्भविज्ञान अत्यंत वैज्ञानिक है—Genetic science+Embryology +Maternal psychology +Nutrition science +Preventive pediatrics.

सबको एक सूत्र में बाँधता है—

"**सत् बीज + सत् क्षेत्र + सत् आहार + सत् मनः** = उत्तम गर्भ"

भाग 5 – धर्मशास्त्र और आयुर्वेद का संयुक्त गर्भविज्ञान

भारतीय ज्ञानपरंपरा में गर्भ-विज्ञान **धर्मशास्त्र**, **आयुर्वेद**, **ज्योतिष**, और **दर्शन** — इन सभी का संयुक्त विषय माना गया है। धर्मशास्त्र गर्भ को धर्म–संस्कार का सिद्ध क्षेत्र कहता है, जबकि आयुर्वेद इसे जैव–मानसिक और पोषण का विज्ञान मानता है। यह भाग इन दोनों को एक सूत्र में बाँधता है।

5.1 गर्भ का दैव–मानुष–पार्थिव त्रिसूत्र

धर्मशास्त्र— **"दैवं मानुषं पार्थिवं च गर्भस्य हेतवः।"**[47]

आयुर्वेद— **"माता-पिता-आत्मा-रसाः गर्भस्य कारणानि।"**[48]

दोनों कथन मिलकर बताते हैं कि गर्भ तीन स्तरों पर निर्मित होता है—

1. **दैवक** (पूर्वकर्म, आत्मप्रवेश)
2. **मानुषक** (माता-पिता का संयम, संस्कार)
3. **पार्थिव** (बीज/शुक्र–शोणित व आहार-पोषण)

5.2 प्राण-आगमन : धर्मशास्त्र–आयुर्वेद का समान बिंदु

धर्मशास्त्र —**"चतुर्थे मासि तु प्राणाः प्रवेशं कुर्वन्ति।"**[49]

आयुर्वेद — **"चतुर्थे प्राणो गर्भं प्रविशति।"**[50]

दोनों मानते हैं कि चौथे महीने में—

- हृदय गति स्थिर
- चेतना का उदय
- गर्भ-चेष्टाएँ प्रारम्भ
- मातृ-भाव का प्रत्यक्ष प्रभाव

आधुनिक विज्ञान भी मानता है कि **18–20 सप्ताह पर Neural heart-brain axis सक्रिय होता है।**

5.3 'धर्म-संस्कार' और 'आयुर्वेदीय पोषण' का तालमेल

धर्मशास्त्र— **"संस्कारो हि गुणान् ददाति।"**[51]

आयुर्वेद— **"रसः प्रथमधातुः गर्भं पोषयति।"**[52]

समन्वित निष्कर्ष:

धर्म-संस्कार = मानसिक–मनोवैज्ञानिक पोषण

आयुर्वेद = आहार–जैविक पोषण

दोनों मिलकर ही सत्सन्तान उत्पन्न करते हैं।

5.4 माता–पिता की मनोदृष्टि : दोनों शास्त्रों की एकमत दृष्टि

धर्मशास्त्र—

"मातुः भावः गर्भस्य भावः।"[53]

आयुर्वेद—

"मातुः भावेन गर्भस्य भावः।"[54]

दोनों ही कहते हैं कि—

माता की खुशी, शांति, संतुलन = **बुद्धिमान-सुसंस्कृत संतति**

माता का भय, क्रोध, तनाव = **दोषयुक्त संतति**

5.5 ऋतु-सम्बंध : जैविक + आध्यात्मिक संगति

धर्मशास्त्र— **"ऋतुकाले तु संयोगो धर्म्यः सत्त्वप्रवर्धनः।"**[55]

आयुर्वेद—**"ऋतुदर्शने गर्भोत्पत्तिः, ऋतिविप्रयोगे विकारः।"**[56]

समन्वय: **Ovulation period + माता–पिता का शारीरिक–मानसिक संतुलन** = श्रेष्ठ गर्भ।

5.6 गर्भ का कर्म–अनुरूप आत्मप्रवेश (धर्म) + बीज–क्षेत्र गुण (आयुर्वेद)

धर्मशास्त्र—**"कर्मानुरोधेन देहप्राप्तिः।"**[57]

आयुर्वेद—**"बीजं समगं फलोत्कर्षकारणम्।"**[58]

संयोजन:

जीव पूर्वकर्मानुसार देह को चुनता है,परन्तु जन्म की गुणवत्ता माता–पिता के बीज व क्षेत्र से तय होती है।

5.7 "पुंसवन" : धर्मशास्त्रीय संस्कार + आयुर्वेदीय औषध विज्ञान

धर्मशास्त्र— **"पुंसवनं गुरुतरं गर्भसंस्काराणाम्।"**[59]

आयुर्वेद— **"पुंसवनार्थं मधुपुष्पादि घृतं दद्यात्।"**[60]

अर्थात् पुंसवन = केवल संस्कार नहीं अपितु

- मनोवैज्ञानिक तैयारी
- हार्मोनल समर्थन
- भ्रूण-तंत्रिका विकास
- गर्भस्थ शिशु की भाव-प्रवृत्ति निर्माण

5.8 गर्भरक्षा—धर्म और आयुर्वेद दोनों का साझा उद्देश्य

धर्मशास्त्र—**"गर्भरक्षा नृपधर्मः।"**[61]

आयुर्वेद— **"गर्भिण्या द्वौ प्राणा धार्येते।"**[62]

दोनों का संयुक्त लक्ष्य— गर्भिणी के आहार, विहार, भावनात्मक संतुलन, सुरक्षा, रोग-निवारण

को सुनिश्चित करना।

5.9 गर्भपात की व्याख्या : धर्मशास्त्र = पाप, आयुर्वेद = दोष-वृद्धि

धर्मशास्त्र—**"गर्भघातो ब्रह्महत्यासमः।"**[63]

आयुर्वेद—**"गर्भभंगो दोषप्रकोपात् भवति।"**[64]

साम्य: धर्म इसे आध्यात्मिक हानि कहते हैं,आयुर्वेद इसे जैविक-मानसिक असंतुलन।

5.10 'वर्ण, गुण, स्वभाव' निर्धारण : धर्मशास्त्र–आयुर्वेद का संयुक्त सिद्धांत

धर्मशास्त्र— **"यथा वीर्यं यथा भावो जातिः तादृशी।"**[65]

आयुर्वेद— **"गुणा बीजाद् भवन्त्येव।"**[66]

दोनों कहते हैं—

संतान का वर्ण, गुण, मैंन्टलिटी, बुद्धि—बीज + आचार + माता-पिता की मनोदृष्टि से तय।

5.11 प्राचीन भारतीय 'जेनेटिक साइंस'

आयुर्वेद में रोगों के आनुवंशिक कारण—**"पितामहादिगतान् दोषान् गर्भोऽनुवर्तते।"**[67] यह modern genetics में Mendelian inheritance के समान है।

धर्मशास्त्र—**"वंशानुवृत्तिः स्वभावतः।"**[68]

अर्थ — वंश-गुण जन्म के साथ आते हैं।

5.12 धर्म–आयुर्वेद समन्वय : 12 निर्णायक बिंदु

1. बीज + संयोग = जैव तथा धर्म दोनों की स्वीकृति
2. प्राण–आगमन का महीना दोनों में समान
3. पुंसवन = संस्कार + औषध
4. मातृ-भाव का महत्व दोनों में समान
5. आहार–मनोविज्ञान का संयुक्त प्रभाव
6. गर्भपात की निंदा और हानि
7. ऋतु–सम्बंध के नियम
8. वंशानुगत गुणों की व्याख्या
9. गर्भरक्षा का समान उद्देश्य
10. धातु-रस पोषण सिद्धांत + मानसिक पोषण
11. संस्कार = neuro-psychological imprint
12. शरीर–मन–आत्मा त्रिवेणी सिद्धांत

॥ निष्कर्ष ॥

भारतीय ज्ञान परम्परा में गर्भ-विज्ञान केवल जैव-चिकित्सा का विषय नहीं, बल्कि धर्म, आयुर्वेद, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, आनुवंशिकी, संस्कार-विज्ञान तथा नैतिकता को समाहित करने वाला एक बहुआयामी एवं समग्र विज्ञान है। धर्मशास्त्रों ने गर्भ को "धर्म–आधारित जीवन की शक्ति" के रूप में देखा, जबकि आयुर्वेद ने उसे "स्वस्थ मानव-निर्माण की कड़ी" माना। दोनों के मध्य अन्तर्निहित साम्य यह दर्शाता है कि भारतीय परम्परा में गर्भ-व्यवस्था न केवल शारीरिक स्वास्थ्य की नींव है, बल्कि चरित्र, संस्कार, मानसिकता और समाज के भविष्य का आधार भी है।

धर्मशास्त्रों में वर्णित बीज-शुद्धि, ऋतुकाल, गर्भाधान-संस्कार, मातृ-आचार, सत्वगुण-वृद्धि, पितृ-अंश–मातृ-अंश के सिद्धांत मानव-संतति की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले वैज्ञानिक मॉडल के समान हैं। आयुर्वेद इन सिद्धांतों को चिकित्सा-तर्क, दोष–धातु–मल सिद्धांत, आनुवंशिकी (बीजभाव), गर्भाशय-स्वास्थ्य, गर्भविकास-चरण और प्रसूति-शास्त्र के माध्यम से और भी स्पष्ट करता है।

चरकसंहिता में कहा गया —"गर्भः पुण्यपुण्यहेतुः"[69] अर्थात् गर्भ वही धारण करता है जो माता-पिता, वातावरण और संस्कारों से प्राप्त

होता है। धर्मशास्त्रों का मत है कि संतति का निर्माण कर्म, संस्कार, आचरण और आहार से होता है; आयुर्वेद इसे बीज, क्षेत्र, समय और आहार-विहार के रूप में विस्तार देता है। दोनों में यह गहन समझ है कि गर्भ के नौ महीनों में शारीरिक के साथ-साथ मानसिक एवं सांस्कृतिक विकास भी होता है।

आधुनिक विज्ञान अब यह स्वीकार करने लगा है कि —भ्रूण बाह्य ध्वनि, संगीत, तनाव, भावनाएँ और वातावरण से प्रभावित होता है। मातृ-पोषण, मनोदशा और हार्मोन भ्रूण के मस्तिष्क-विकास को निर्धारित करते हैं। जीन (Genetics) एवं एपिजेनेटिक्स (Epigenetics) गर्भकालीन परिस्थितियों से बदल सकते हैं।

ये सभी बातें धर्मशास्त्र और आयुर्वेद में हजारों वर्ष पूर्व प्रतिपादित थीं। इस शोध-पत्र का समग्र निष्कर्ष यह है कि—

1. धर्मशास्त्र एवं आयुर्वेद गर्भ-विज्ञान के दो पूरक स्तम्भ हैं।
2. भारतीय गर्भ-विज्ञान आधुनिक चिकित्सा से कहीं अधिक समावेशी, निवारक एवं संस्कार-केंद्रित है।
3. गर्भ-संस्कार केवल धार्मिक कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि जैविक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक विज्ञान है।
4. स्वस्थ गर्भ-व्यवस्था समाज के नैतिक, मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य की आधारशिला है।
5. भारत के समकालीन स्वास्थ्य-तंत्र में प्राचीन गर्भ-विज्ञान को सम्मिलित कर “Holistic Prenatal Care Model” विकसित किया जा सकता है।
6. गर्भवती स्त्री के लिए आहार, वातावरण, भावनाएँ और संस्कार — ये सभी भ्रूण-गुणनिर्माण को निर्णायक रूप से प्रभावित करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि धर्म, चिकित्सा, मनोविज्ञान और आनुवंशिकी का संगम भारत की गर्भ-विज्ञान परम्परा में अद्वितीय है, और इसकी पुनर्स्थापना आने वाली पीढ़ियों के समग्र विकास के लिए अत्यावश्यक है।

॥ संदर्भ-सूची ॥

1. सुश्रुत. सुश्रुत संहिता (Kaviraj Kunjalal Bhishagratna, Trans.). Chaukhamba Orientalia.
2. वद्धजीविका कश्यप, कश्यप संहिता. चौखम्बा
3. वाग्भट अष्टाङ्ग हृदयम् चौखम्बा
4. मनुस्मृति (मेधातिथि व्याख्या). चौखम्बा
5. याज्ञवल्क्य स्मृति (मिताक्षरा टीका). चौखम्बा
6. गौतमधर्मसूत्र, मोतीलाल बनारसीदास
7. गरुड़पुराण, गीताप्रैस गोरखपुर
8. अथर्ववेद संहिता (R.L. Kashyap द्वारा अनुदित).. Sri Aurobindo Kapali Shastri Institute.

संदर्भ: -

1 ग. पु. अध्याय 3
2 रक, शरीरस्थान 2/4
3 ग्वेद 10.184.1
4 न्दोग्य उपनिषद् 6.3.2
5 नुस्मृति 2.27
6 रक संहिता, शारीरस्थान 2.4–46
7 ग्वेद 10.184.1
8 ग्वेद 10.135.3
9 थर्ववेद 2.36.1
10 न्दोग्य, 6.3.2
11 न्दोग्य उपनिषद् (6.3.2
12 4.5
13 64.51
14 3.46
15 चरक संहिता, शारीर 2.4
16 शतपथ ब्राह्मण 1.5.1.2
17 मनुस्मृति 2.27
18 नारदस्मृति 12.45
19 तैत्तिरीय ब्राह्मण 3.3.2
20 ब्रह्मसूत्र 3.1.1, शांकरभाष्य
21 तैत्तिरीय उपनिषद् 1.11
22 मनुस्मृति 6.32
23 गरुड़ पुराण, प्रेतकल्प 2.34
24 नारदस्मृति 11.45
25 महाभारत, शांति पर्व 65.10
26 गरुड़ पुराण, अध्याय 1.105
27 ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृति खंड 26.10
28 चरक संहिता, शरीरस्थान 4.3
29 चरक संहिता, शरीरस्थान 4.6
30 चरक संहिता, शरीरस्थान 2.3
31 सुश्रुत संहिता, शरीरस्थान 3.13
32 सुश्रुत संहिता, शरीरस्थान 3.14
33 सुश्रुत संहिता, शरीरस्थान 3.14
34 चरक संहिता, शरीरस्थान 4.10
35 सुश्रुत संहिता, शरीरस्थान 3.15
36 गरुड़ पुराण 2.34
37 चरक संहिता, 4.11
38 चरक संहिता 4.11
39 सुश्रुत संहिता 3.16
40 चरक संहिता, च. सू. 28.4
41 सुश्रुत संहिता 10.2
42 चरक संहिता, शारीर 8.32
43 चरक संहिता, 4.13
44 सुश्रुत संहिता, 3.20
45 चरक संहिता, 8.20
46 चरक संहिता 4.4
47 याज्ञवल्क्य स्मृति 1.11
48 चरक संहिता, शरीर 4.6
49 गरुड़ पुराण, प्रेतकल्प 2.34
50 सुश्रुत संहिता, शरीर 3.15
51 मनुस्मृति 2.27
52 चरक संहिता, सू. 28.4
53 ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृति 26.10
54 चरक संहिता 4.13
55 नारदस्मृति 12.45
56 सुश्रुत संहिता 3.12
57 ब्रह्मसूत्र 3.1.1
58 चरकसंहिता 4.4
59 गृह्यसूत्र, आश्वलायन 1.14
60 चरक संहिता, शारीर 8.30
61 महाभारत, शांति पर्व 65.10
62 सुश्रुत संहिता 10.2
63 नारदस्मृति 11.45
64 चरक संहिता, 4.15
65 मनुस्मृति 3.67
66 चरक संहिता 4.4
67 सुश्रुत संहिता 3.22
68 मनुस्मृति 1.69
69 चरक, शारीर 2/6